भारत का

सुन्दरतम स्थल

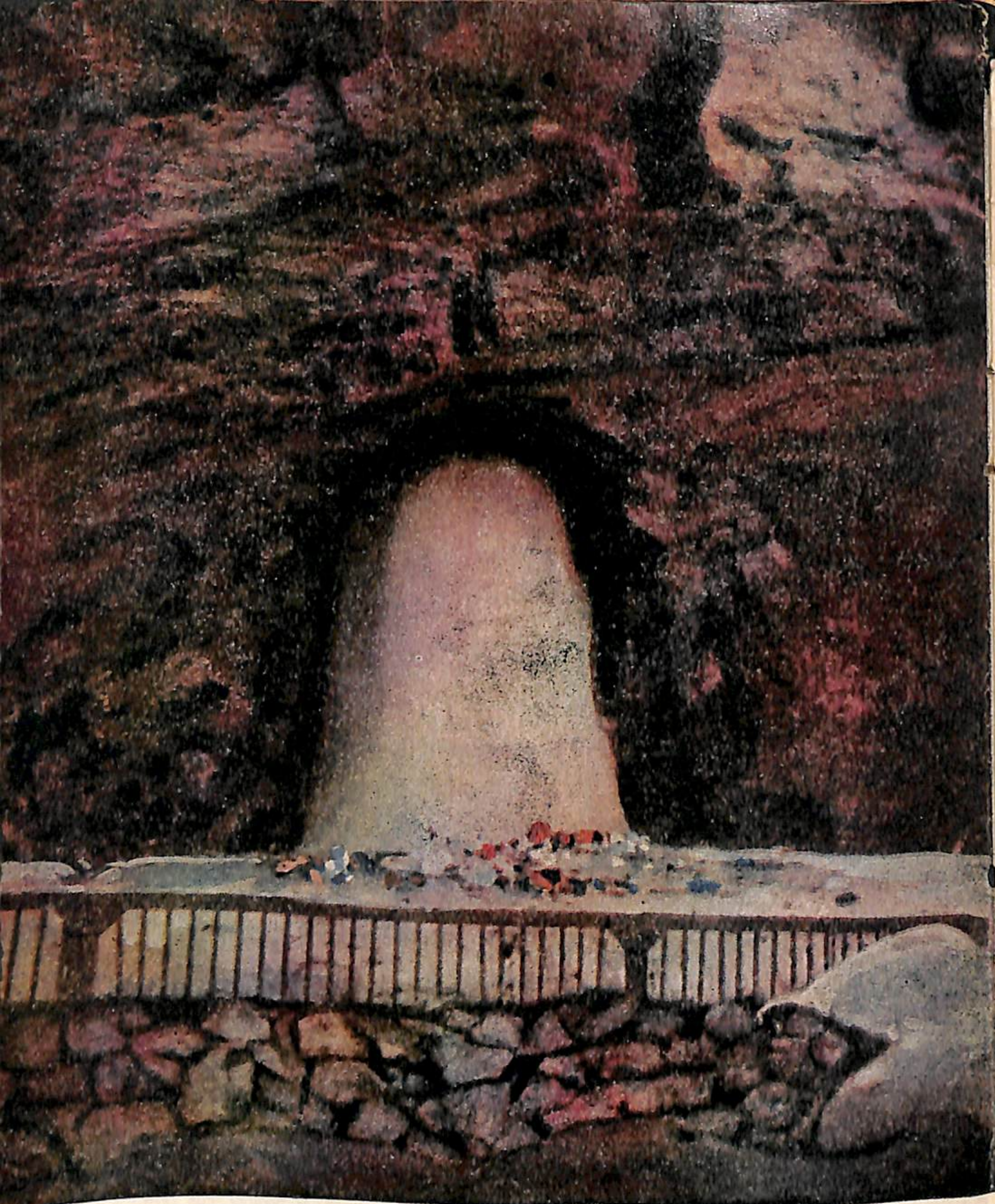
काश्मीर



छात्रीय कार्यक्रम

२७ जुलाई से ७ सितम्बर १९६[illegible]

आकाशवाणी, दिल्ली



अमरनाथ की गुफा में हिमनिर्मित शिवलिंग

प्रसिद्ध है कि यह शिवलिंग शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से चन्द्रकिरणों के साथ बढ़ता-बढ़ता पूर्णिमा को पूरा बन जाता है और फिर ढलता-ढलता अमावस्या को बिल्कुल अदृश्य हो जाता है। सदा यही क्रम चलता रहता है।

भारत का सुन्दरतम स्थल काश्मीर

समुद्र से लगभग 6 हजार फुट की ऊंचाई पर बसी हुई काश्मीर घाटी का चौरासी मील लम्बा और बीस पच्चीस मील चौड़ा सुरम्य प्रदेश धरती पर नन्दन-कानन का दृश्य उपस्थित करता है। लगभग साढ़ेसात हजार फुट ऊंचे पीर पंजाल पर्वत पर बनिहाल नामक स्थान पर बनी हुई दो मील लम्बी जवाहर सुरंग से निकल कर जब यात्री दूसरी ओर पहुंचता है तो लगता है कि उसके सामने सैंकड़ों मील लम्बा चौड़ा एक अत्यन्त आकर्षक अनुपम उपवन खिला हुआ है और देखते ही देखते जब यात्री की बस पर्वत शिखर से नीचे उतरकर काश्मीर की घाटी में प्रवेश करती है तो प्रत्येक व्यक्ति मन्त्र-मुग्ध सा रह जाता है उस घाटी के दिव्य सौन्दर्य को निहार कर। काश्मीर के बाग बगीचों और झीलों-चश्मों की तो बात ही क्या इस भूमि के कण कण में स्वर्गीय सौन्दर्य बिखरा पड़ा है। प्रकृति की लीला-स्थली काश्मीर की सुषमा की एक झांकी प्रस्तुत करने के उद्देश्य से आयोजित इस क्रम में निम्न वार्ताएं प्रसारित की जायंगी :—

(१) श्रीनगर की सैर

जम्मू काश्मीर प्रान्त की ग्रीष्म ऋतु की राजधानी श्रीनगर शंकराचार्य और हरिपर्वत नामक दो पहाड़ों के बीच बसा हुआ एक परम शोभाशाली नगर है। नगर के बीचोंबीच बहती हुई जेहलम नदी और साथ में सटी हुई डल झील तथा अनेकों उपवनों ने इसकी शोभा में चार चांद लगा दिये हैं।

श्रीनगर के बीचोंबीच बहती हुई जेहलम पर बने हुए दस पुलों में से एक का दृश्य



शंकराचार्य पहाड़ पर चढ़ कर नीचे कहीं जेहलम और डल में तैरते हुए शकारों (छोटी छोटी सुसज्जित नौकाओं) हाउसबोटों, बहत (माल ढोने वाले बेड़ों) और डल में लहराते हुए कमलवनों तथा इधर उधर के उद्यानों की शोभा निहारते निहारते दर्शक तन्मय हो जाता है। यहां अखरोट की लकड़ी की तरह तरह की वस्तुएं, पेपरमेशी और चांदी की कलात्मक सज्जा-सामग्री व रेशमी वस्त्रों, नमदों, तथा पुरानी लोइयों को जोड़ कर उन पर कशीदाकारी कर आकर्षक रूप में प्रस्तुत किए गए गब्बों को देख कर जी चाहता है कि ये सब की सब चीजें खरीद ली जाएं। एशिया के 'वेनिस' श्रीनगर की दिव्य छटा की एक झांकी दिनांक 27-7-64 को प्रस्तुत की जायगी।

(२) प्रमुख उद्यान

यूं तो सारी की सारी काश्मीर-घाटी ही एक विशाल प्राकृतिक उद्यान ही है, पर उसकी शोभा को और भी अधिक निखारने के लिए मुगल सम्राट अकबर से लेकर वर्तमान सरकार तक ने जो एक से एक बढ़ कर मनोहारी बाग बगीचे लगाए हैं, उनमें पहुंच कर तो दर्शक जीते जागते सौन्दर्य की क्रोड़ में जा बैठता है। चश्मेशाही, निशात, शालीमार, और नसीम बाग तथा नेहरू पार्क जैसे श्रीनगर के उद्यानों के अतिरिक्त अच्छाबल, कुकड़नाग और वेरीनाग में भी बड़े सुन्दर बाग हैं। इन सभी बागों में चलते हुए फव्वारों की पंक्तियों, रंगबिरंगे फूलों की क्यारियों, चनार के विशाल वृक्षों और बागों के ठीक बीचों बीच स्थान स्थान पर जलचादरों से फिसलती हुई छोटी-छोटी नहरों के कारण ये उद्यान एक ऐसा लुभावना दृश्य उपस्थित करते हैं कि वहां से वापिस लौटने को मन ही नहीं करता। काश्मीर के इन नन्दन-काननों की छटा दिनांक 10-8-64 को प्रस्तुत की जायगी।

अच्छाबल उपवन का एक दृश्य





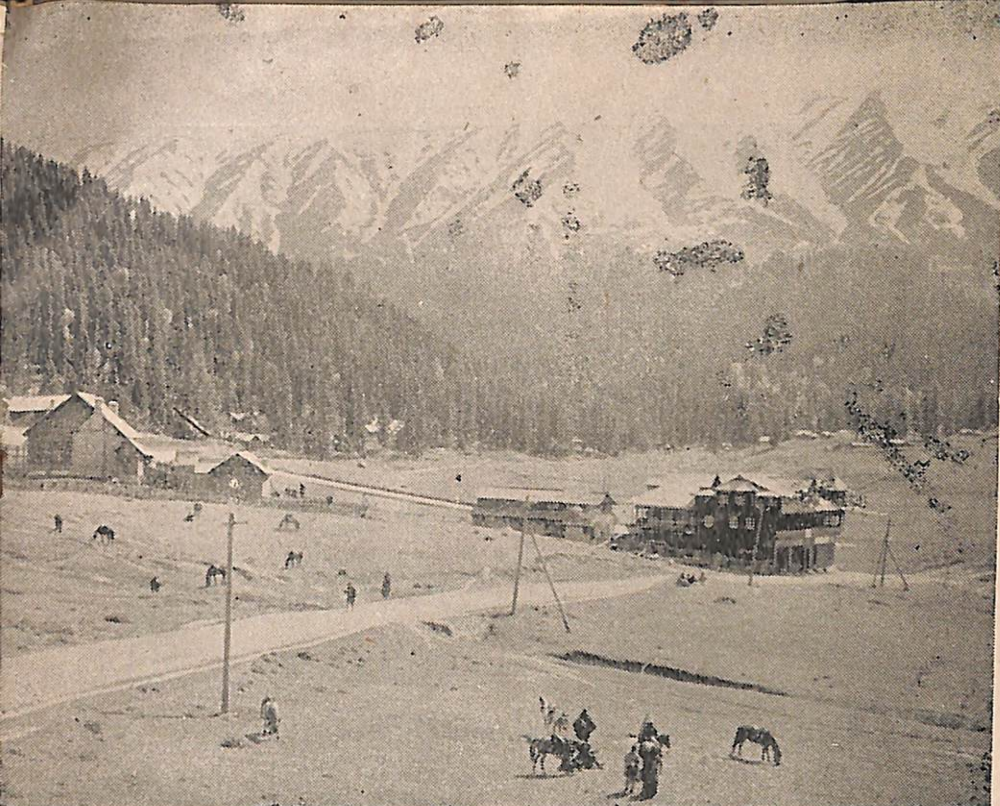
इस तरह नावों में बैठकर फलफूल बेचने वाले श्रीनगर में जहां तहां दिखाई दे जाते हैं

(३) झीलें और चश्मे

काश्मीर की घाटी में शीतल स्वच्छ मधुर जल से परिपूरित अनेक छोटी बड़ी झीलें यात्रियों को बरबस जल-विहार के लिए आकृष्ट कर लेती हैं। 5 मील लम्बी और 2 मील चौड़ी डल झील श्रीनगर के साथ ही सटी हुई है। इस पर तैरते हुए खेत दर्शक के लिए आठवां आश्चर्य बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त नागिन झील, मानसबल झील, होकरसर, अफरवट, गंगबल, शेषनाग, और कौंसरनाग नामक झीलों का सौन्दर्य भी अनूठा है। काश्मीर की वुलर झील एशिया में मीठे और ताजा पानी की सब से बड़ी झील है। यह साढ़े बारह मील लम्बी और 5 मील चौड़ी है। जेहलम नदी इस में एक ओर से गिरती है और दूसरी ओर से निकलती है। शेषनाग, कौंसरनाग और गंगबल जैसी झीलें समुद्रतल से 12 हजार फुट की ऊंचाई पर हैं, जिन में प्रतिबिम्बित होते हुए हिम-धवल पर्वत-शिखर एक अनूठा आकर्षक दृश्य उपस्थित कर देते हैं। इन के अतिरिक्त वेरीनाग का चश्मा—जहां से जेहलम निकलती है—गंधक-मिश्रित जलवाले अनन्त नाग के चश्मे, मटन के चश्मे, और दूसरे कई छोटे-बड़े चश्मे भी अपनी मनोहारी छटा से काश्मीर की घाटी को नित्य नया सौन्दर्य प्रदान करते रहते हैं।

काश्मीर-घाटी की इन झीलों और चश्मों के सम्बन्ध में एक वार्ता दिनांक 24-8-64 को प्रसारित की जाएगी।





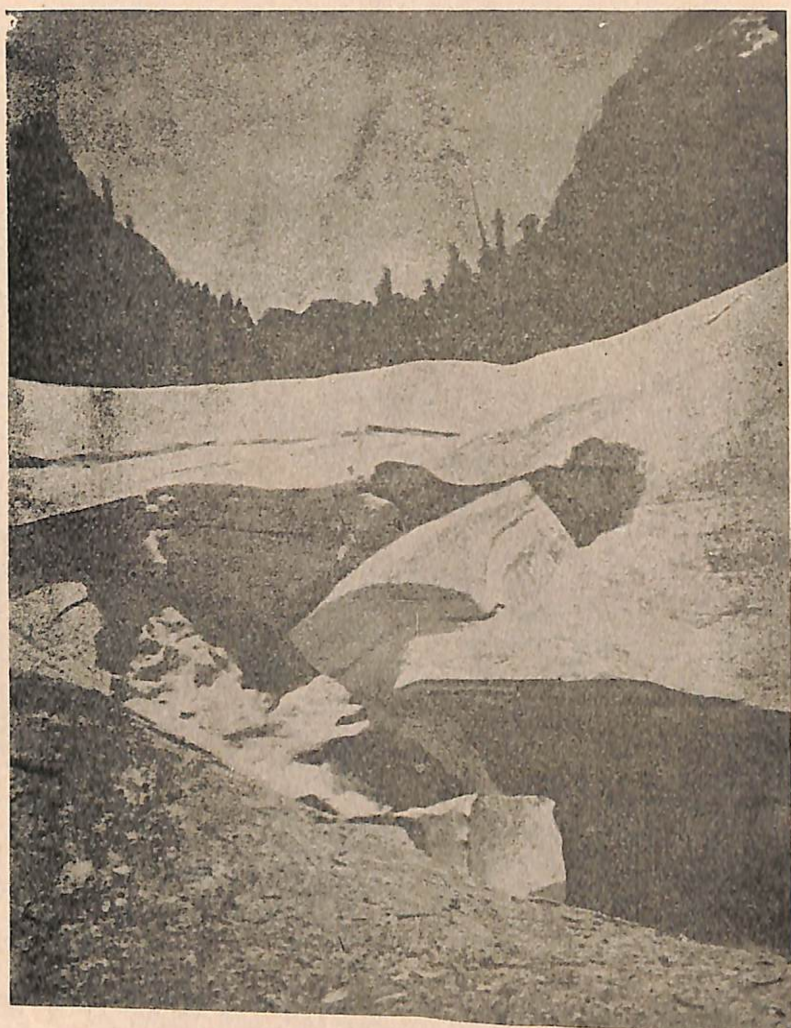
पहलगाम का एक दृश्य

(४) पहलगाम से अमरनाथ

मैदानों की प्रचण्ड गर्मी से झुलसा और रातदिन की कड़ी मेहनत से थका हारा यात्री पहलगाम की प्राकृतिक विश्रामस्थली में पहुंचते ही अपनी सारी थकावट को भूल कर एकदम तरोताजा हो जाता है। एक ओर विशाल वृक्षों से ढकी पर्वतमाला और दूसरी ओर कल कल छल छल कर नाचती गाती तरंगों से भरी लिदर नदी की धाराएं 7200 फुट की ऊंचाई पर बसे हुए पहलगाम की प्राकृतिक छटा को अत्यधिक आकर्षक बना देती हैं। होटलों और आवासगृहों के रहते हुए भी यहां लोग टेन्ट लगाकर रहना पसन्द करते हैं,

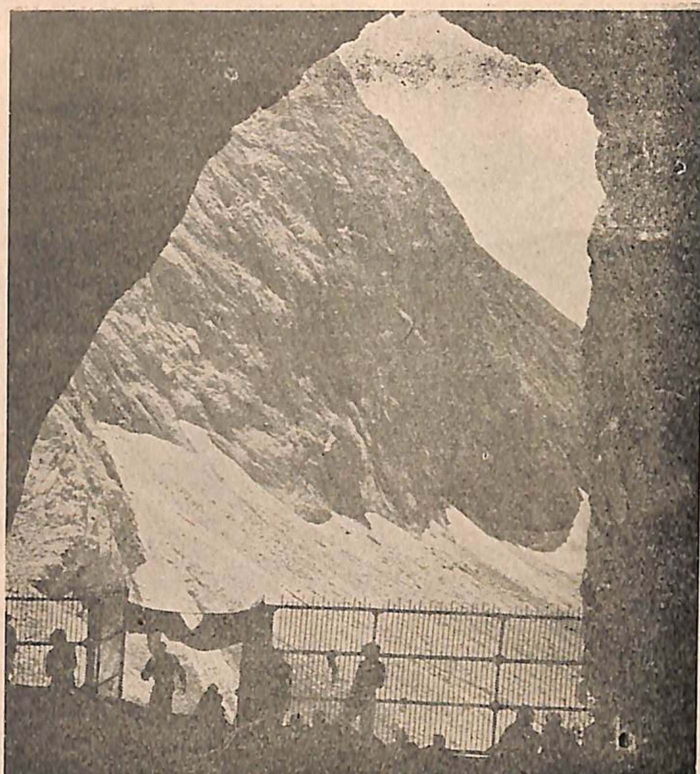
अमरनाथ की यात्रा यहीं से शुरू होती है। यात्री यहां से चल कर पहला पड़ाव 8 मील दूर चन्दनवाड़ी नामक स्थान में डालता है।

← सांप की तरह बल खाती हुई जेहलम नदी के दोनों ओर बसे हुए श्रीनगर का एक भव्य दृश्य



चन्दनवाड़ी के पास बर्फ का पुल

चन्दनवाड़ी में बर्फ के पुल को पार कर पिस्सू घाटी की दमतोड़ चढ़ाई चढ़ने के बाद जब वह शेषनाग झील पर पहुंचता है तो वहां के स्वर्गीय सौन्दर्य को निहारते निहारते मार्ग की थकावट भूल जाता है। शेषनाग से फिर चढ़ाई शुरू होती है और 14700 फुट ऊंचे महागुना दर्रे को पार कर पंचतरणी में जाकर आखिरी पड़ाव डालता है। दूसरे दिन सवेरे उठकर दो एक मील तक



अमरनाथ गुफा की एक झांकी

बर्फ पर चल कर यात्री अमरनाथ की गुफा तक जा पहुंचता है। यहां चारों ओर हिम-मुकुट-मंडित पर्वतमालाएं एक ऐसा दृश्य उपस्थित करती हैं कि यात्री का रोम रोम सात्विक भावनाओं से उल्लसित हो उठता है। पहलगाम से अमरनाथ तक की 27 मील की इस पैदल यात्रा की मधुर स्मृतियां सदा के लिए मानस-पटल पर अंकित हो जाती हैं।

पहलगाम से अमरनाथ तक प्रकृति कई रूप बदलती रहती है। पहले चीड़ और देवदार आदि के वृक्षों से ढके पर्वत, फिर भोजपत्र के विशाल वृक्षों से आच्छादित पहाड़ फिर वृक्षों से सर्वथा रहित किन्तु छोटे-छोटे रंग-बिरंगे फूलों से ढकी शेषनाग झील के आसपास की ढलवानें आती हैं और अन्त में एकदम सूखे नंगे या बर्फ से चमचमाते पर्वत-शिखर चारों ओर अपनी चकाचौंध से दर्शक की आंखों को चमत्कृत कर देते हैं।

पहलगाम से अमरनाथ तक की यात्रा की यह रोचक कहानी दिनांक 7-9-64 को सुनाई जायगी।



अपने काम में लगा एक कारीगर देखिए कितने सुन्दर बेल बूटे काढ़ रहा है ।

M6AIR/64—600—18-7-64—GIPF.



जेहलम में इधर से उधर तैरते हुए शकारे (छोटी-छोटी सुसज्जित नौकाएं)
नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहे हैं



काश्मीरी बालाएं

भारत का सुन्दरतम स्थल

काश्मीर

छात्रीय कार्यक्रम



२७ जुलाई से ७ सितम्बर १९६ [illegible]

आकाशवाणी, दिल्ली